

वैश्वीकरण : हिन्दी भाषा एवं साहित्य का दिशा निर्धारण

डॉ अंकिता बोरा

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी, गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

वैश्वीकरण के दौर में बदलते भाषा स्वरूप एवं साहित्य का आंकलन इस शोध का मूल उद्देश्य है। अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश का प्रभाव हिन्दी भाषा एवं साहित्य को नई दिशा दे रहा है। नई भाषा की अवधारणा की स्वीकार्यता का प्रश्न भी हमारे सामने उत्पन्न हो गया है। वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा की बढ़ती स्वीकार्यता में सिनेमा, बाजार, सोशल मीडिया का योगदान भी दिखाई देता है। भूमण्डलीकरण के दौर में प्रवासी साहित्य भी हिन्दी भाषा एवं साहित्य का विस्तार कर रहा है। हिन्दी को विश्व-बाजार में अपनी पहचान बनाने के लिए 'विश्व हिन्दी सम्मेलनों' का आयोजन समय-समय पर किया जाता है, जो हिन्दी भाषा के विश्व पाठकों एवं साहित्यकारों का परिचय कराते हैं, जो कि हिन्दी भाषा एवं साहित्य को विश्व पटल पर रखने का भी एक माध्यम है। इसके साथ ही भूमण्डलीकरण के इस समय में इन सम्मेलनों के आयोजन का लक्ष्य – वैश्विक धरातल पर सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा हिन्दी भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार, हिन्दी परिषद की स्थापना तथा विदेशों में हिन्दी भाषा एवं साहित्य का प्रचार करना होता है।

मूल शब्द: भूमण्डलीकरण, औद्योगिकीकरण, उपभोक्तावाद, महिला लेखिकाएँ, अस्तित्ववाद

वैश्वीकरण की क्रिया जीवन के किसी एक क्षेत्र को प्रभावित नहीं कर रही है बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। फिर भाषा का क्षेत्र इसका अपवाद कैसे हो सकता है? वैश्वीकरण के प्रभाव से अनेक शब्दों का उद्भव एवं विकास हुआ है। "भूमण्डलीकरण विश्वव्यापी यथास्थिति और बदलाव की ताकतों, प्रक्रियाओं, दिशाओं और प्रकृति के टकराव और संघर्ष के विभिन्न बिन्दुओं को जोड़ने वाली अवधारणा बन चुकी है। इन प्रक्रियाओं का कार्य क्षेत्र सारा संसार बन चुका है। भूमण्डलीकरण के अनेक रूपों के बारे में मतभेदों के बीच एक सामान्य बिन्दु सभी देशों में हो रहे अनवरत बदलावों का आपसी अन्वयनाश्रित सम्बन्ध यानी गहन आपसी जुड़ाव है।"¹

विज्ञान ने आज दुनिया के सभी देशों को एक बाजार बना दिया है जिससे किसी भी क्षेत्र या स्थान अथवा देश की घटना समस्त देशों को प्रभावित करती है। अन्तर्राष्ट्रीय निकटता के परिणाम स्वरूप विदेशी साहित्य ने भी हमारे साहित्य को प्रभावित किया है इसलिए साहित्य में अन्तर्राष्ट्रीय रूचि का विकास इसी भूमण्डलीकरण का परिणाम है। भारत देश की राजभाषा हिन्दी आज विश्व साहित्य और विश्व बाजार का मुकाबला करने के लिए सक्षम और तत्पर हो उठी है। पाश्चात्य कवियों व उनके साहित्य तथा काव्यान्दोलनों का हिन्दी साहित्य व कवियों पर प्रभाव इसी तत्परता एवं हिन्दी की सक्षमता का प्रमाण है। डॉ० वी०एम०नेथन अपने लेख 'हिन्दी की वैश्विक चेतना' में हिन्दी साहित्य में हुए प्रभाव की स्थिति को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं—“औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, कृषि, संस्कृति का विघटन, नारी जागरण, स्थानान्तरण आदि से सामाजिक पक्ष हैं, जिनका प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य पर पड़ा। औद्योगिक सभ्यता की यांत्रिकता, महानगरों का अजनबीपन, सांस्कृतिक विघटन की पीड़ा यह सब ऐसे घटक हैं, जिससे विश्व-साहित्य अनुप्रमाणित हुआ है। इनमें भावनाओं की अपेक्षा विचारों की अभिव्यक्ति अधिक हुई है। अस्तित्ववाद, लघुमानवतावाद, आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, अतिथथार्थवाद, जादुई यथार्थवाद, उपभोक्तावाद आदि अनेक विस्तृत वैचारिक परिसर, जिनका प्रभाव विश्व साहित्य के साथ हिन्दी साहित्य पर पड़ा।”²

हिन्दी साहित्य के भण्डार की श्री वृद्धि करने में वैश्वीकरण का अथाह योगदान रहा, जिससे हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय पाठकों का भी एक बहुत बड़ा वर्ग तैयार हुआ और

जिससे विश्व बाजार में हिन्दी भाषा गतिमान दिखाई देती है। यद्यपि वैश्वीकरण ने हिन्दी को अत्यधिक प्रभावित भी किया है, एजाज अहमद का तो यह तक मानना है कि “अब, जहाँ तक मुझे दिखाई पड़ता है, 'भूमण्डलीकरण' शब्द का मुख्य वैचारिक काम सारी दुनिया में, राजनीति और अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों के साथ-साथ संस्कृति के परिदृश्य में भी, एक तरह की बेबसी का भाव भरना और हर किसी को यह यकीन दिलाना है कि वास्तव में अब कोई विकल्प नहीं है; कि राष्ट्र-राज्य तक भूमण्डलीकरण की प्रक्रियाओं के आगे असहाय है, भारत और चीन जैसे विशाल देश भी-जहाँ दुनिया की आधी आबादी रहती है, असहाय है। इस विचारधारा में 'भूमण्डलीकरण' को अप्रतिरोध्य कहा जाता है, क्योंकि इसका चित्रण कुछ इस तरह होता है, जैसे यह खुद प्रकृति का कोई बल- कोई नियम हो, जो मानव जाति पर एक तुफान की तरह टकरा रहा हो-कुछ बेहद निर्व्यक्तिक, वित्त एवं प्रौद्योगिकी द्वारा निर्देशित, जिस पर किसी का नियंत्रण, नहीं रहा हो, वास्तविक राष्ट्र-राज्यों तक का नहीं-एक इतनी ताकतवर शक्ति कि जो राष्ट्र इसके साथ चलने को तैयार नहीं होगा। इतिहास की कूड़ा पेटी में फेंक दिये जाने को अभिशप्त होगा।”³

किन्तु साहित्य के माध्यम से भूमण्डलीकरण ने सारी प्रक्रिया को स्पष्ट कर दिया। मानव द्वारा साहित्यकार के चिन्तन को भूमण्डलीकरण की रहस्यात्मकता एवं अस्पष्टता को समझना कोई चुनौती नहीं हो सकती। वैश्वीकरण के इस दौर में साहित्य का परिवर्तित रूप सामने आने लगा था। यही कारण था कि हिन्दी साहित्य को विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए उसकी आलोचना पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव पड़ा। आज चूंकि सम्पूर्ण विश्व को जोड़ने के लिए टेक्नोलॉजी के माध्यम से तीव्र गति से क्रान्ति हुई है तो इसका प्रभाव साहित्य के क्षेत्र में पड़ना लाजमी था। हिन्दी भाषा के स्वरूप में परिवर्तन वैश्वीकरण के दौर में ही हुआ है, यह धारण गलत है क्योंकि हिन्दी भाषा प्रारम्भ से ही परिवर्तनशील रही है। हिन्दी भाषा को अपने रूप तक पहुँचने के लिए ही अनेक मार्गों से गुजरना पड़ा है। संस्कृत-पाली-प्राकृत-अपभ्रंश के उपरान्त हिन्दी भाषा अपने मानक रूप में सामने आई है।

हिन्दी भाषा के मानक रूप का शासकीय तथा अशासकीय दोनों स्तरों पर व्यापक प्रचार-प्रसार एवं विकास हुआ है। हिन्दी जीवन

से जुड़े व्यापारिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिक क्षेत्र में काम करने के लिए राष्ट्रीय सीमाओं को लाँघकर पचास से अधिक देशों में पहुँच गई है। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी की विधिवत शिक्षा प्रदान की जाती है। हिन्दी ने वैश्वीकरण के इस दौर में अपनी सरसता, सरलता और पूर्णता तथा स्पष्टता के कारण वैश्विक जनसमूह के मध्य अपना स्थान बना लिया है। सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी ने सिर्फ भारत के राज्यों को ही एक सूत्र में नहीं बाँधा, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। हिन्दी को विश्व-बाजार में अपनी पहचान बनाने के लिए 'विश्व हिन्दी सम्मेलनों' का आयोजन समय-समय पर किया जाता है, जो हिन्दी भाषा के विश्व पाठकों एवं साहित्यकारों का परिचय कराते हैं, जो कि हिन्दी भाषा एवं साहित्य को विश्व पटल पर रखने का भी एक माध्यम है। इसके साथ ही भूमण्डलीकरण के इस समय में इन सम्मेलनों के आयोजन का लक्ष्य – वैश्विक धरातल पर सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा हिन्दी भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार, हिन्दी परिषद की स्थापना तथा विदेशों में हिन्दी भाषा एवं साहित्य का प्रचार करना होता है।

हिन्दी की भाषिक विशेषताओं एवं इसकी संरचना को विश्व ने स्वीकार किया है। वास्तव में हिन्दी का ज्ञान अभिव्यक्ति के माध्यम के ज्ञान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह हिन्दी समाज के जातीय अस्मितानुसार संस्कृति तथा सभ्यता का ज्ञान भी है, भूमण्डलीकरण के दौर में यद्यपि अंग्रेजी का अपना वर्चस्व व्यापक है। शम्भूनाथ का कहना है कि "अंग्रेजी की दादागीरी भले ही चारों तरफ छाई हो, पर भारतीय भाषाओं के बिना बहुमुखी शैक्षिक विकास की तरफ बढ़ना मुश्किल है।"⁴

भूमण्डलीकरण के दौर में अर्थात् बीसवीं शती के अंतिम दो दशकों में हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय विकास तीव्र गति से हुआ है। सिनेमा, विज्ञापन, वेब, बाजार एवं सोशल मीडिया के क्षेत्र में हिन्दी की माँग अन्य भाषाओं की तुलना में तेजी से बढ़ी है। सूचना क्रान्ति का सशक्त माध्यम कम्प्यूटर व इन्टरनेट ही है, जिस पर की आज हमारे पास हिन्दी के अनेक शब्द कोश उपलब्ध हैं। हिन्दी की सभी प्रकाशित पुस्तकों की जानकारी इन्टरनेट पर उपलब्ध हैं। आज अनेक हिन्दी भाषी कम्प्यूटर का प्रयोग अपनी भाषा में कर रहे हैं। यहाँ तक की कम्प्यूटर टाइपिंग के सर्वाधिक फॉन्ट हिन्दी में ही उपलब्ध हैं। आज मोबाइल तक में हिन्दी सॉफ्टवेयर का प्रयोग सम्भव हो सका है, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में हिन्दी भाषा की माँग को स्पष्ट करता है। हिन्दी पोर्टल, ई-पत्र, ई-वार्ता, बहुभाषीय ई-मेल सेवा, हिन्दी सर्च इंजन, हिन्दी के साथ बहुभाषीय ई-ग्रीटिंग सेवा आदि 'वेब' दुनिया में प्रयोग किये जाते हैं।

"वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी बहुत बड़ी भूमिका निभाने जा रही है। यह भूमिका सार्क देशों की एक मात्र भाषा बनकर उभरने में छुपी हुई है। सार्क देश अगर किसी एक भाषा पर भविष्य में निर्भर कर सकते हैं, तो वह हिन्दी ही होगी क्योंकि बंगलादेश, पाकिस्तान, भूटान, नेपाल, श्रीलंका इस भाषा को सहज ही अपना सकते हैं।"⁵

साथ ही वैश्वीकरण के समय में प्रवासी भारतीयों द्वारा हिन्दी के विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए किये जाने वाले कार्यों एवं भूमिका को कदापि नजर-अंदाज नहीं किया जा सकता है। मॉरीशस, सूरीनाम, गुयाना, फिजी, मलेशिया, सिंगापुर जैसे देशों में प्रवासी भारतीयों के द्वारा हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है। विश्व का शायद ही कोई ऐसा देश हो, जहाँ प्रवासी भारतीय न हों और वहाँ हिन्दी भाषा विद्यमान न हो। वस्तुतः इस बात को बताने में भी मुझे कोई संकोच नहीं है कि भूमण्डलीकरण के दौर में आज हिन्दी के अस्तित्व पर संकट के बादल भी दिखाई पड़ते हैं, वे इस मायने से की भूमण्डलीकरण के कारण हिन्दी की भाषिक संरचना में भी बदलाव आया है। उसकी वर्तनी, उसके

शब्द, उसका वाक्य-विकास एवं उसका व्याकरण ही भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया से प्रवाहित नहीं हुआ है, बल्कि उसकी लिपि को भी परिवर्तित किया जा रहा है। वह इस रूप में कि आज देवनागरी लिपि की जगह हिन्दी के शब्दों को रोमन लिपि में लिखा जा रहा है। लेकिन लिपि भाषा की अनिवार्यता नहीं है। यह मात्र एक दृश्यात्मक साधन है और भाषा को सुरक्षित रखने का भी एक माध्यम माना जा सकता है। श्री मोहनलाल सर अपने लेख देवनागरी लिपि: कश्मीरी भाषा के सन्दर्भ में लिखते हैं— "भाषा और लिपि का कोई अन्योन्याश्रित सम्बन्ध नहीं होता। अगर लिपि बदली जाती है तो भाषा में कोई परिवर्तन नहीं आता।"⁶

साहित्य में अन्तर्राष्ट्रीय रूचि का विकास वैश्वीकरण का परिणाम है। हिन्दी भी विश्व साहित्य का मुकाबला करने के लिए तत्पर हो उठी है तथा उसने विदेशी जुगुप्सा और सांस्कृतिक स्थानान्तरण के दोषारोपण को भूलकर विदेशी विशेषकर यूरोपीय साहित्य के साथ सामन्जस्य स्थापित कर लिया है। यह निकटता दिनोदिन अत्यन्त तीव्रता के साथ बढ़ती जा रही है। "पहले लिрикल बैलेड्स और पल्लव के प्रकाशन में जहाँ एक शताब्दी से अधिक का अन्तर था, वहीं वेस्टलैंड तथा तारसप्तक के बीच लगभग पच्चीस वर्षों का ही अन्तर रह गया और इस अन्तर को आधुनिक साहित्य ने और भी न्यूनतर कर दिया।"⁷

किसी भी भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार में संचार माध्यमों का विशिष्ट योगदान रहा है। हिन्दी इसका अपवाद नहीं है। उन्नीसवीं सदी के आखिरी तथा बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों में हिन्दी भाषा, विशेष रूप से हिन्दी गद्य के विकास और परिमार्जन में हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओं के योगदान का ऐतिहासिक महत्व है। पर पिछले दशकों में हिन्दी के स्वरूप में काफी तेजी से बदलाव हुआ है।

भाषा महज अभिव्यक्ति का साधन ही नहीं है। भाषा में मनुष्य की अस्मिता स्वर पाती है। उसमें सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति होती है। समय के साथ होने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों की अनुगूँज उसमें सुनाई पड़ती है। वैश्वीकरण के बाद हिन्दी के अखबारों में भाषा का रूप जितनी तेजी से बदला है उतनी तेजी से हिन्दी मानस की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना नहीं बदली है। नतीजतन यह बदलाव अनायास न होकर सायास है। एक खास उभर रहे उपभोक्ता वर्ग को ध्यान में रखकर इस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया जा रहा है। यह शहरी नव धनाढ्य वर्ग है जिसकी आय में अप्रत्याशित वृद्धि उदारीकरण, बाजारीकरण और भूमण्डलीकरण के दौर में हुई है। यही वर्ग खुद को इस भाषा में अभिव्यक्त कर रहा है। इस वर्ग में हिन्दी क्षेत्र के बहुसंख्यक किसान, मजदूर, स्त्री तथा दलित नहीं आते। हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक रामविलास शर्मा लिखते हैं कि "समाज में वर्ग पहले से ही होते हैं। भाषा में कठिन और अस्वभाविक शब्दों के प्रयोग से वे नहीं बनते किन्तु इन शब्दों के गढ़ने और उनका व्यवहार करने के बारे में वर्गों की अपनी नीति होती है।"⁸

बदलती भाषा के बीच साहित्य में भी परिवर्तन परिलक्षित होता है। निश्चय ही हिन्दी साहित्य के पाठकों का ग्राफ बड़ा है, लेकिन वे पाठक सरल हिन्दी पढ़ने के पक्षपाती हैं। यही कारण है कि हिन्दी भाषा व हिन्दी साहित्य की गुणवत्ता में गिरावट आई है। पाठकों की वृद्धि पर प्रसन्न होने की आवश्यकता है या गुणवत्ता की गिरावट में चिन्तित होने की, यह विचारनीय प्रश्न है। क्योंकि हिन्दी भाषा 'हिन्गलिश' की ओर तीव्र गति से बढ़ रही है। हिन्दी साहित्य अपनी गुणवत्ता और मात्रा की दृष्टि से विश्वस्तरीय स्थान प्राप्त करने की होड़ में लगा है। साथ ही लेखक भी अपने पाठक को लुभाने के लिए यूरोपीय संस्कृति का पीछा करते हुए चलता है और उसे पिछाड़ने की जद्दो-जेहद में स्वयं पिछड़ने लगता है। अपनी संस्कृति को त्यागकर नई चकाचौंध दुनिया का बखान

करते हुए अपने पाठकों की संख्या में वृद्धि करता है। नव उपनिवेशवाद के इस दौर में कई लेखक उत्तर आधुनिक हो गये और भूमण्डलीकरण के खतरों से आँखें चुराकर परोक्षतः उसकी मदद करने लगे। उत्तराधुनिकतावाद ने समाजवाद और यथार्थवाद के अन्त की घोषणा कर दी। कतिपय साहित्यकार उजाले की बात करते-करते अंधेरे की गिरफ्त में कैद हो गये। परन्तु अब भी कई साहित्यकार, विशेषतः हिन्दी साहित्यकार वैश्वीकरण के खतरों के प्रति सचेत ही नहीं हैं बल्कि विविध विधाओं द्वारा इसकी विसंगतियों को रचनात्मक रूप से पाठकों के सम्मुख रख रहे हैं। वे खामोशी के साथ एक नये यथार्थवाद की रचना कर रहे हैं।

वैश्वीकरण से हिन्दी साहित्य में अच्छा व बुरा दोनों प्रभाव पड़े हैं। एक ओर जहाँ समाज के मध्य दूरी कम हुई है, वहीं दूसरी ओर बाजारवाद को भी बढ़ावा मिला है। हिन्दी साहित्य की स्थिति भी डाँवाडोल हो रही है।

क्या सचमुच यह मुल्क उन मदारियों का है
जो बजा रहे हैं भूमण्डलीकरण की दुगडुगी
और उन सपेरो का
जो बेच रहे हैं जाति-धर्म का जहर

उसे बेचने दो अपनी चादर
और उसे अपनी पगड़ी
है गुनवन्ती!
मैं नहीं बेचूँगा अपने शब्द
अर्द्ध संशयवादी और अर्द्धआत्ममुग्ध
यूरोप के बाजार में।⁹

भाषाई क्रान्ति के इस दौर में हिन्दी भी अब पीछे नहीं है। विश्व भाषा के रूप में अपनी पहचान बनाने के लिए वह अब पारम्परिक रिवाज से हटकर विज्ञान-प्रौद्योगिकी और व्यापार-प्रबन्धन आदि हर क्षेत्र में अपनी दस्तक दे रही है। हिन्दी भाषा के इस नव्यतम रूप का युगानुकूल परिवर्तन एवं नवसृजन अत्यन्त तीव्र गति से हो रहा है। हिन्दी भाषा आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अत्यन्त समृद्ध है। विश्व में हिन्दी की स्थापना दो स्तर पर है। एक धारा तो वह है, जिसके अन्तर्गत विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। दूसरी धारा है, उन देशों में जहाँ प्रवासी भारतीय बसे हुए हैं और वे अपने साथ हिन्दी भाषा को भी विकासमान बना रहे हैं। "हिन्दी का वैश्विक प्रचार-प्रसार आकस्मिक अथवा अप्रत्याशित नहीं है। इसका बहुत बड़ा श्रेय उन प्रवासी भारतीयों को है, जिन्होंने अपनी हिन्दी भाषा को संरक्षण प्रदान किया। इसी प्रकार उन व्यवसायियों-व्यापारियों की हिन्दी सेवा का मूल्य भी हम कम नहीं आँक सकते, जिन्होंने व्यापार-व्यवसाय का माध्यम हिन्दी को बनाये रखा।"¹⁰ हिन्दी भाषा के क्षेत्र विस्तार के साथ-साथ हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भी अवश्य विस्तार हुआ है, किन्तु बाजारीकरण के इस दौर में साहित्यकारों ने अपने साहित्य को भुनाने के लिए; अपने साहित्य के विषयों में तेजी के साथ परिवर्तन किया, परिणामस्वरूप वह अपनी परम्परा को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ गया। पाश्चत्य विद्वान इलियट परम्परा को त्यागने का पक्षपाती नहीं है, उनका मानना है कि परम्परा के साथ नवीनता को अपनाना चाहिए। लेकिन उत्तर आधुनिकता के बहाव में हिन्दी साहित्य भी बहता चला गया। आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विधा चाहे वह कविता हो, कहानी हो, उपन्यास हो या अन्य कोई भी विधा, उनमें भाषा व वैचारिकता दोनों परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। भाषा में अंग्रेजी शब्दों की बढ़ती संख्या कभी-कभी बहुत व्याकुल करती है और यह सोचने पर मजबूर करती है कि इस परिवर्तन का कोई अन्त है या यह ऐसे ही अपने पथ पर बढ़ती जाएगी। आज के कई साहित्यकारों का मानना है कि समाज में हो रहे भाषिक परिवर्तन

का साहित्य में समावेश होना लाजमी है। नीलेश रघुवंशी की कविता 'बेखटक' में भाषिक व वैचारिक दोनों परिवर्तन परिलक्षित होते हैं—

"निकलना चाहती हूँ आधी रात को बेखटक
रात बारह का 'शौ' देखकर
रेलवे स्टेशन पर घूमूँ जब मैं हाथ डाले
कभी प्रतीक्षालय में जाऊँ तो कभी दूर कोने की
खाली बेंच को भर दूँ अपनी बेखटकी इच्छाओं से"

"उठती है रीढ़ में एक सर्द लहर
कैलेण्डर, होर्डिंग्स, विज्ञापन, आइटम सांग,
परदे पर दिखती आकर्षण बिकाऊ देह
होर्डिंग्स पर पसरे देह के सौंदर्य से चौंधियाती हैं आँखें।"¹¹

वैश्वीकरण के दौर की एक सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही है कि इस दौर में कई महिला लेखिकाएँ उभर कर सामने आई हैं। विमर्शों का दौर इसी वैश्वीकरण की उपज है। स्त्री विमर्श यूरोप में प्रारम्भ होकर भारत की दहलीज को पार करते हुए, सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य के गलियारों में गुँज उठा। वैश्विक स्तर पर महिलाएँ अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए तत्पर हैं। साथ ही वैश्विक-साहित्य महिला लेखिकाओं के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करता है।

निष्कर्षत

कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का हिन्दी भाषा व साहित्य में मिला जुला प्रभाव पड़ता है। कहा भी जाता है कि किसी से प्रभावित होना बुरा नहीं है, लेकिन उसका आदि हो जाना बुरा है। आज अपनी भाषा व साहित्य को वैश्विक प्रभाव से रोकने के लिए कितना भी प्रयास क्यों न किया जाए, उसे रोकना सम्भव नहीं क्योंकि आज टेक्नोलॉजी के माध्यम से विश्व एक गांव की सीमा में सिमट कर रह गया है, जो कि आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस बाजारीकरण के कारण अपने विचारों को सम्पूर्ण विश्व के समक्ष सरल से सरल भाषा में व्यक्त करना आवश्यक है नहीं तो सामान्य पाठकों के बीच लेखक द्वारा अपने विचारों को पहुँचाना अत्यन्त कठिन है। इसीलिए वैश्वीकरण द्वारा हिन्दी भाषा व साहित्य पर पड़ने वाले प्रभाव को नकारात्मक रूप में नहीं देखा जा सकता। हाँ लेकिन यह अवश्य है कि भाषा के गिरते स्तर को सुदृढ़ बनाने का प्रयास अवश्य किया जाना चाहिए। हिन्दी एक विशाल भाषा है। साथ ही विशाल क्षेत्र की भाषा है। विश्व स्तर पर बढ़ रहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक अन्तःसम्बन्धों के कारण वैचारिक स्तर पर एक वैश्विक चेतना का प्रादुर्भाव हो रहा है, जिससे समूचे विश्व साहित्य को एक नयी दृष्टि मिल रही है। हिन्दी साहित्य भी इस वैश्विक चेतना से पूरी तरह आन्दोलित है, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय विचारधाराओं का परिप्रेक्ष्य वर्तमान हिन्दी साहित्य में पूर्णतः परिलक्षित हो रहा है।

सन्दर्भ-सूची

1. कमल नयन काबरा— भूमण्डलीकरण : विचार, नीतियाँ और विकल्प, प्रकाशक— प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण—2005, पृष्ठ संख्या— 226,
2. विभूति मिश्र— सम्मेलन पत्रिका, भाग 89 संख्या—3, पृष्ठ संख्या—70
3. एजाज अहमद, संस्कृति और भूमण्डलीकरण, आलोचना, सहस्त्राब्दी अंक—6, जुलाई—सितम्बर, 2001 पृष्ठ संख्या—9
4. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी— दस्तावेज़ 127, अप्रैल—जून, 2010, पृष्ठ संख्या—7

5. डॉ गिरिराजशरण अग्रवाल-शोध दिशा 12, अक्टूबर-दिसम्बर 2010, पृष्ठ संख्या-81
6. विश्व हिन्दी सम्मेलन (तृतीय) पत्रिका, प्रथम संस्करण-1983, पृष्ठ संख्या-159
7. दृष्टव्य: डॉ0 वी0 एम0 नेथन-हिन्दी की वैश्विक चेतना, सम्मेलन पत्रिका, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, भाग 89, संख्या-3, पृष्ठ संख्या-70
8. भूमण्डलीकरण के दौर में हिन्दी लेख (इंटरनेट के माध्यम से),
9. मदन कश्यप, कालयात्री, नीम रोशनी में, पृष्ठ संख्या-88
10. डॉ0 वी0 एम0 नेथन-हिन्दी की वैश्विक चेतना, सम्मेलन पत्रिका, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, भाग 89, संख्या-3, पृष्ठ संख्या-72
11. समकालीन साहित्य, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 22, अंक 12, विशेष अंक 16 दिसम्बर 2013, पृष्ठ संख्या- 60।